एस.एस. कॉलेज जहानाबाद
हिन्दी विभाग, स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा भाग-1 के लिए।
विषय – 'चन्द्रगुप्त' नाटक
शिक्षण – व्हाट्स-एप
समय – 11. बजे से 12 बजे तक, 1.7.2020.
शिक्षक – डॉ. रमेश शर्मा
पाठ – 'चन्द्रगुप्त' नाटक के स्त्री पात्र

प्रिय छात्र-छात्राओं !

'चन्द्रगुप्त' नाटक के स्त्री पात्रों में अलका के बाद सबसे महत्वपूर्ण स्त्री पात्रों में कार्नेलिया है जो विदेशी यवन आक्रांता सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस की पुत्री है। कार्नेलिया ग्रीक की राजकुमारी है। ग्रीक शिविर में यह रहती है पर, भारतीयता के प्रति इसका अनुराग विलक्षण है। नाटकीय कार्य-व्यापार की दृष्टि से इसमें हमेशा एक ही भाव दिखलाई पड़ता है और वह है – भारत के प्रति अनुराग और प्रेम। इसी से सम्बद्ध अन्य भाव – भावुकता, और दृढ़ता, शान्तिप्रियता भी समय-समय पर उसमें झलकते हैं। वह जबतक भारतवर्ष में है भारत के नैसर्गिक सौंदर्यास्वादन में ही निरत दिखाई देती है। विदेशी होते हुए भी भारत की एक-एक बात पर मुग्ध है। भारतीय आध्यात्मिकता उसके लिए जिज्ञासा का विषय है। उसने चन्द्रगुप्त से कहा— "मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के श्यामल कुंज, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुए शैलश्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चाँदनी, शीतकाल की धूप और भोले कृषक तथा सरल कृषक बालाएँ, बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमाएँ हैं। यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि

भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है। कदापि नहीं। अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि हैं, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है।' ऐसी ही निर्मल ज्योति की ~~भूमि के~~ पवित्र भूमि को उसका पिता ग्रीक वाहिनी सेना लेकर रक्त-रंजित करेगा इसका विचार कर वह कोमल चित्त की युवती दुःखी हो उठती है। पिता को समझाने का उद्योग करती है। उसकी भावुकता और सहृदयता उन संवादों से भी ध्वनित होती है जो उसके और बंदी बनकर आई हुई सुवासिनी के साथ हुए हैं। प्रणय के रूप और उसकी गंभीरता का भी उसे व्यावहारिक ज्ञान है। दूसरे के हृदय की भी सच्ची स्थिति समझती है। दारा की कन्या के विषय में उसकी उक्ति बड़ी ही सहृदयतापूर्ण हुई है। यहाँ रहकर रामायण और उशना-कुणिक इत्यादि के विचार पढ़कर वह दार्शनिक और तार्किक हो गई है।

दांड्यायन के आश्रम में चन्द्रगुप्त के प्रथम दर्शन में ही वह उसकी ओर आकृष्ट हो जाती है। दांड्यायन की भविष्यवाणी से भी चन्द्रगुप्त के व्यक्तित्व का प्रभाव उस पर पड़ता है। फिर तो उत्तरोत्तर चन्द्रगुप्त के उत्कर्ष को देखते और समय-समय पर उससे मिलने के कारण उसकी अनुराग-कलिका विकासोन्मुख होती रहती है।

शेष अगली कक्षा में।

1.7.20